बंध, उदय और सत्व (क्षपक श्रेणी) (कसाय पाहुड चूर्ण सूत्र पर आधारित)

गुणस्थान / कर्मप्रकृतियां	1 मिथ्यात्व	2 सासादन	3 मिश्र	4 अविरत स. द.	5 संयमा संयम	6 प्रमत्त संयत	7 अप्रमत्त संयत	8 अपूर्व करण	9 अनिवृत्ति करण	10 सुक्ष्म साम्पराय	11 उपशांत मोह	12 क्षीण मोह	13 सयोग केवली	14 अयोग केवली	
घातिया															Under Line = पाप प्रकृति
ज्ञानावरण – 5										5)					) बंध व्युच्छिप्ति
												5)			) उदय व्युच्छिप्ति
												5)			) सत्व व्युच्छिप्ति
दर्शनावरण – 9		स्त्या.), निनि), प्रप्र)						नि), प्र)		4)					
						स्त्या.) निनि,) प्रप्र)						नि), 4) प्र)			
									स्त्यानगृद्धि आदि 3)			नि), 4) प्र)			
मोहनीय – 26	(मि.), (नपुं.)	अनंता 4) स्त्री)		अप्र. 4)	प्र.4)	अरति), शोक)		हा.), र.), भ.), जु.),	सं 4), पु.)						स. मि. और स. प्र. का बंध नहीं होता है
28	(मिथ्या.) स.मि.→ स.प्र.→	→ → अनंता 4)	(स.मि.) →	(स.प्र अप्र.4)	प्र.4)		स.प्र)	हा.), र.), अ), शो.), भ.),जु.),	वेद 3), सं –क्रो,) मान),माया)	संज्जवलन लोभ)					→ अनुदय
28							अनंता4) दर्श.मो.3)		हा.), र.), अ), शो.), भ.),जु.), अप्र. 4,) प्र, 4), वेद 3) सं –क्रो,) मान),माया)	संज्जवलन लोभ)					
अंतराय – 5										5)					
												5)			
												5)			

गुणस्थान / कर्मप्रकृतियां	1 मिथ्यात्व	2 सासादन	3 मिश्र	4 अविरत स. द.	5 संयमा संयम	6 प्रमत्त संयत	7 अप्रमत्त संयत	8 अपूर्व करण	9 अनिवृत्ति करण	10 सुक्ष्म साम्पराय	11 उपशांत मोह	12 क्षीण मोह	13 सयोग केवली	14 अयोग केवली	
अघातिया														⇩	द्विचरम समय
आयु – 4	नरक)	तिर्यंच)		मनुष्य)			देव)							⇩	.....चरम समय
				न.),दे.)	त्रि.)									मनुष्य)	
				नरक)	त्रि.)		देव)							मनुष्य)	
गोत्र – 2		नीच)								उच्च)					
					नीच)									उच्च)	
														नीच) उच्च)	
वेदनीय – 2						असाता)							साता)		
													साता +) असााता	असाता या) साता	
														असाता या) साता साता या) असाता	
नाम – 93															
शरीर – 5 (+बंधन+संघात)	अहा.→	→	→	→ औदा)	→	→		आ.), तै.),का.),वै.)							→ अबंध
	अहा.→	→	→	→ वैकि.)	→	( )							तैजस) औदा.) कार्म.)		
		अहा.→												5)	→ **असत्व**
अंगोपांग – 3	अहा.→	→	→	→ औदा)	→	→		आ.), वै.)							
	अहा.→	→	→	→ वैकि.)	→	( )							औदा.)		
		अहा.→												3)	
निर्माण								निर्माण)							
													निर्माण)		
														निर्माण)	

गुणस्थान / कर्मप्रकृतियां	1 मिथ्यात्व	2 सासादन	3 मिश्र	4 अविरत स. द.	5 संयमा संयम	6 प्रमत्त संयत	7 अप्रमत्त संयत	8 अपूर्व करण	9 अनिवृत्ति करण	10 सुक्ष्म साम्पराय	11 उपशांत मोह	12 क्षीण मोह	13 सयोग केवली	14 अयोग केवली	
संस्थान – 6	हुण्डक)	न्यग्रोधादिक) 4						समचतुरस्र)							वामन, कुबज, स्वाति (वृक्ष) आदि
													6)		
														6)	
संहनन – 6	सृपा.)	वज्रनाराचादि 4)		वज्र वृ.ना.)											
							अर्धना.), कील.) सृपा.)				नाराच) व.ना.)		व.वृ.ना.)		
														6)	
त्रस / स्थावर	(स्था.)							त्रस)							
		(स्था.)												त्रस)	
									स्था.)					त्रस)	
बादर / सूक्ष्म	(सूक्ष्म)							बादर)							
		(सूक्ष्म)												बादर)	
									सूक्ष्म)					बादर)	
पर्याप्तक / अ.प.	(अ.प.)							पर्याप्तक)							
	(अ.प.)													पर्या.)	
														अ.प.) पर्या.)	
प्रत्येक / साधारण	(साधा.)							प्रत्येक)							
	(साधा.)												प्रत्येक)		
									साधा.)					प्रत्येक)	
स्थिर / अस्थिर						अस्थिर)		स्थिर)							
													(स्थिर) (अस्थिर)		
														स्थिर) अस्थिर)	
शुभ / अशुभ						अशुभ)		शुभ)							
													(शुभ) (अशुभ)		
														शुभ) अशुभ)	

गुणस्थान / कर्मप्रकृतियां	1 मिथ्यात्व	2 सासादन	3 मिश्र	4 अविरत स. द.	5 संयमा संयम	6 प्रमत्त संयत	7 अप्रमत्त संयत	8 अपूर्व करण	9 अनिवृत्ति करण	10 सुक्ष्म साम्पराय	11 उपशांत मोह	12 क्षीण मोह	13 सयोग केवली	14 अयोग केवली	
सुभग / दुर्भग		दुर्भग)						सुभग)							
				दुर्भग)										सुभग)	
														दुर्भग) सुभग)	
आदेय / अनादेय		अनादेय)						आदेय)							
				अना.)										आदेय)	
														अना.) आदेय)	
यश / अयश						अयश)				यश)					
				अयश)										यश)	
														अयश) यश)	
गति – 4	नरक)	त्रियंच)		मनुष्य)				देव)							
				न.), दे.)	त्रियंच)									मनुष्य)	
									नरक) त्रियंच)					देव) मनुष्य)	
आनुपूर्व्य – 4	नरक)	त्रियंच)		मनुष्य)				देव)							
		नरक →	→ + 3 →	4)											
									नरक) त्रियंच)					देव) मनुष्य)	
जाति – 5	(1–4)							पंचेन्द्री)							इंद्रियाँ
		1–4)												पंचेन्द्री)	
									1–4)					पंचेन्द्री)	
अगुरूलघु								अगुरूलघु)							
													अगुरूलघु)		
														अगुरूलघु	
उपघात / परघात								उप), पर.)							
													उप), पर.)		
														उप), पर.)	

गुणस्थान / कर्मप्रकृतियां	1 मिथ्यात्व	2 सासादन	3 मिश्र	4 अविरत स. द.	5 संयमा संयम	6 प्रमत्त संयत	7 अप्रमत्त संयत	8 अपूर्व करण	9 अनिवृत्ति करण	10 सुक्ष्म साम्पराय	11 उपशांत मोह	12 क्षीण मोह	13 सयोग केवली	14 अयोग केवली	
उच्छवास								उच्छवास)							
													उच्छवास)		
														उच्छवास)	
आतप	(आतप)														
	(आतप)														
									आतप)						
उद्योत		उद्योत)													
					उद्योत)										
									उद्योत)						
प्रशस्तविहायोगति/अ.प्र.		अ.प्र.)						प्र. वि. ग.)							
													प्र.) अप्र.)		
														प्र.) अ.प्र.)	
सुस्वर / दुस्वर		दुस्वर)						सुस्वर)							
													दु.) सु.)		
														दु.) सु.)	
वर्णादि – 4								4)							
4													4)		
20 *														20)	
तीर्थंकर	→	→	→					तीर्थंकर)							
	→	→	→	→	→	→	→	→	→	→	→	→	(तीर्थंकर	तीर्थंकर)	
		→	→											तीर्थंकर)	

*कुल 20 प्रकृतियों (5 रस, 5 वर्ण, 8 स्पर्श, 2 गंध) में से एक समय में एक Category से एक एक का ही बंध/उदय हो सकता है।